Maharashtra Education Society's

Abasaheb Garware College

(Autonomous)

(Affiliated to Savitribai Phule Pune University)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 [NEP] के अंतर्गत हिंदी पाठ्यक्रम

Under the National Education Policy 2020 [NEP] M.A.Hindi Course

एम.ए. हिंदी प्रथम वर्ष

प्रथम एवं द्वितीय अयन

(Faculty of Humanities)

Syllabus under Autonomy

M.A. I (Hindi)

Choice Based Credit System Syllabus

To be implemented from the Academic Year - 2026-27

Structure of the Coruse : M.A. I (Hindi)

अनुक्रम

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष/प्रथम अयन : 22 क्रेडिट

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट	पृष्ठ क्रमांक
HIN-505 -MJ	भाषा विज्ञान	4 T	
HIN-506-MJ	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य	4 T	
HIN-507-MJ	हिंदी नाटक (प्रायोगिक)	4 P	
HIN-508-MJ	हिंदी व्यावहारिक व्याकरण	2 T	
	Major Elective Mandatory (one)		
HIN-512-MJ	हिंदी नाटक और रंगमंच (Theory)	2T	
HIN-513-MJ	हिंदी नाटक और रंगमंच (Practical)	2P	
HIN-514-MJ	हिंदी भाषा शिक्षण (Theory)	2T	
HIN-515-MJ	हिंदी भाषा शिक्षण (Practical)	2P	
	Research Methodolgy		
HIN-541-MJ	शोध प्रविधि (Research Methodolgy)	4 T	

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष/द्वितीय अयन : 22 क्रेडिट

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट	पृष्ठ क्रमांक
HIN-555MJ	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र	4 T	
HIN-556-MJ	भारतीय लोक साहित्य	4 T	
HIN-557-MJ	संवाद कौशल (प्रायोगिक)	4 P	
HIN-558-MJ	हिंदी आलोचना	2 T	
	Major Elective Mandatory (one)		
HIN-562-MJ	अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार (Theory)	2T	
HIN-563-MJ	अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार (Practical)	2P	
HIN-564-MJ	आधुनिक हिंदी कविता (Theory)	2T	
HIN-565-MJ	आधुनिक हिंदी कविता (Practical)	2P	
	Internship		
HIN-581-MJ	On Job Training [OJT / F T]	4	

एम. ए. हिंदी

प्रथम एवं द्वितीय वर्ष

कार्यक्रम अध्ययन परिणाम (Program Learning Outcomes) :

एम्. ए. हिंदी पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

हिंदी साहित्य के विविध कालों का प्रवृत्तिगत अध्ययन किया जाएगा।

साहित्य की विविध विधाओं का स्वरूपात्मक ज्ञान प्राप्त होगा।

साहित्यकार और उनके साहित्यिक ग्रंथों का अध्ययन किया जाएगा।

संवाद कौशल और प्रस्तुति कौशल प्राप्त होगा।

हिंदी भाषा का विशिष्ट ज्ञान और लेखन कौशल प्राप्त होगा।

आलोचनात्मक सोच निर्धारित होगी।

साहित्यिक कलाकृतियों का विश्लेषण करने की क्षमता विकसित होगी।

अनुसंधानात्मक वृत्ति का विकास होगा।

रोजगार के लिए अवश्यक क्षमताओं का विकास होगा।

रचनात्मक लेखन के लिए दिशा मिलेगी।

एम. ए. हिंदी

प्रथम एवं द्वितीय वर्ष

कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम (Program Specific Outcomes (PSOs):

एम .ए. (हिंदी) उपाधि सफलतापूर्वक प्राप्त करने के पश्चात् निम्नलिखित कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम प्राप्त होंगे:

भिन्न पृष्ठभूमि में जन्में हिंदी साहित्य के विविध कालों का आकलन करेंगे।

साहित्यिक ग्रंथों की समीक्षा कर करेंगे।

भाषा कौशलों का प्रयोग कर सकेंगे।

रचनाओं के विश्लेषण के लिए सैद्धांतिक ढाँचे का उपयोग कर सकेंगे।

विविध आलोचनात्मक दृष्टिकोणों का संश्लेषण कर सकेंगे।

अनुसंधान के लिए आवश्यक सैद्धांतिक जानकारी प्राप्त करेंगे।

रोजगार के लिए आवश्यक क्षमताएँ प्राप्त करेंगे।

डिजिटल उपकरण और तकनीक का प्रयोग कर सकेंगे।

रचनात्मक लेखन के लिए आवश्यक क्षमताएँ प्राप्त करेंगे।

चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक क्षमताएँ प्राप्त करेंगे। ।

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष / प्रथम अयन

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट
HIN-505-MJ	भाषा विज्ञान	4

लक्ष्य (Aim) :

भाषा विज्ञान में भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन कई दृष्टियों से किया जाता है, जैसे सामान्य भाषा विज्ञान, वर्णनात्मक भाषा विज्ञान, एककालिक भाषा विज्ञान, बहुकालिक भाषाविज्ञान, तुलनात्मक भाषा विज्ञान, सैद्धांतिक भाषा विज्ञान,अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषा विज्ञान भाषओं के अध्ययन विश्लेषण का विज्ञान है। अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान में भाषा का प्रयोग परक अध्ययन किया जाता है, जैसे, भाषा सिखाना, अनुवाद करना, कोश बनाना, लिपि सुधार, शैली विवेचन आदि। समाज भाषा विज्ञान में समाज के परिप्रेक्ष्य में भाषा का अध्ययन किया जाता है। भाषा संबंधी सारे कौशल भाषा विज्ञान के अध्ययनोरांत ही अर्जित किये जा सकते हैं। प्रत्येक काल में भाषा का विश्लेषण होना आवश्यक होता है। भाषा में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ, स्वरूप एवं प्रयोग आदि की दृष्टि से भाषा विज्ञान का विश्लेषणात्मक अध्ययन आवश्यक है। भारतीय समाज बहुभाषिक है परिणामतः बहुभाषा वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है ।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

छात्र भाषा विज्ञान का सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करेंगे।

भाषा विज्ञान के अंग और भाषा विज्ञान के अध्ययन की शाखाओं का परिचय प्राप्त करेंगे।

ध्वनि निर्मिति की प्रक्रिया, वागवयव तथा उसकी कार्य प्रणाली का परिचय प्राप्त करेंगे।

अर्थ परिवर्तन की दिशाओं तथा अर्थ परिवर्तन के कारणों का परिचय प्राप्त करेंगे।

भाषा वैज्ञानिक कौशलों से अवगत होंगे और भाषा का आकलन करने की क्षमता विकसित होगी।

भाषा के विश्लेषण की क्षमता विकसित करेंगे।

भाषा सीखने की प्रक्रिया में भाषागत मूल्यों के व्यावहारिक पक्ष का परिचय प्राप्त करेंगे।

भाषा के महत्व को समझेंगे और साहित्य के अध्ययन में भाषा विज्ञान की उपयोगिता समझेंगे।

भाषा और उसके उपांगों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

भाषा और संप्रेषण तथा भाषा और समाज की जानकारी प्राप्त करेंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Critical Thinking	Moral & Ethical Values	Communication Skills	Life-long Learning	Evaluating Skills	Analytical Reasoning	Research-related skills	Professional Skills	Self Directed Learning	Domen Knowledge	Critical Thinking	Life Skills	Application of Knowledge	Synthesis of Knowledge	Research Aptitude	Employment Skills	Digital Literacy	Recreational Skills	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5	PSO-6	PSO-7	PSO-8	PSO-9	PSO-10
CO-1	3	2		3	2		2		2	2	3			2	2					2
CO-2	3	2		3	2		2		2	2	3			2	2					2
CO-3	3	2		3	2		2		2	2	3			2	2					2
CO-4	3	2		3	2		2		2	2	3			2	2					2
CO-5	3	2		3	2		2		2	2	3			2	2					2
CO-6	3	2		3	2		2		2	2	3			2	2					2
CO-7	3	2		3	2		2		2	2	3			2	2					2
CO-8	3	2		3	2		2		2	2	3			2	2					2
CO-9	3	2		3	2		2		2	2	3			2	2					2
CO-10	3	2		3	2		2		2	2	3			2	2					2
Wgt Avg	3	2		3	2		2		2	2	3			2	2					2

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – I	भाषाविज्ञान : परिभाषा, स्वरूप और व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ। समाजभाषाविज्ञान का सामान्य परिचय।	15 तासिकाएँ
इकाई – II	स्वन विज्ञान : स्वन की परिभाषा, वागावयव और कार्य, स्वन वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिम परिवर्तन।	15 तासिकाएँ
इकाई – III	रूप विज्ञान : रूप प्रकिर्या का स्वरूप और शाखाएँ, रूपिम की परिभाषा, रूपिम के भेद और प्रकार्य। पदबंध और उपवाक्य : पदबंध का स्वरूप, पदबंध के भेद, उपवाक्य का स्वरूप, उपवाक्य के भेद।	15 तासिकाएँ
इकाई – IV	अर्थ विज्ञान : अर्थ की परिभाषा और स्वरूप, शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ और कारण। प्रोक्ति विज्ञान : अर्थ, परिभाषा, स्वरूप। प्रोक्ति – वर्गीकरण और आधार। प्रोक्ति की अशुद्धियाँ।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन 100 अंक

आंतरिक मूल्यांकन : 50 अंक (लघुत्तरी परीक्षा 20 अंक, शोध परियोजना- 20 अंक, मौखिक प्रस्तुति/क्षेत्र भेट (अध्ययन यात्रा) /साक्षात्कार- 10 अंक)

सत्रांत परीक्षा : 50 अंक

सत्रांत परीक्षा के प्रश्नपत्र का स्वरूप -

प्रश्न 1. इकाई-1 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न।   (10 अंक)

प्रश्न 2. इकाई-2 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न।   (10 अंक)

प्रश्न 3. इकाई-3 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न।   (10 अंक)

प्रश्न 4. इकाई-4 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न।   (10 अंक)

प्रश्न 5. इकाई-1,2,3,4 पर टिप्पणीयाँ। (चार में से दो) (हर इकाई पर एक-एक टिप्पणी) (10 अंक)

संदर्भ ग्रंथ :

1. भाषा और समाज - रामविलास शर्मा
2. आधुनिक भाषा विज्ञान - राजमणि शर्मा
3. सांस्कृतिक भाषा विज्ञान - डॉ. रामानंद तिवारी
4. भाषा विज्ञान - सं. डॉ. राजमल बोरा
5. भाषा शास्त्र तथा हिंदी भाषा की रूपरेखा - डॉ. देवेंद्रकुमार शास्त्री
6. भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी
7. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र - डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
8. हिंदी भाषा संरचना - डॉ. भोलानाथ तिवारी
9. आधुनिक भाषाविज्ञान - डॉ. कृपाशंकर सिंह, डॉ. चतुर्भुज सहाय
10. हिंदी का वाक्यात्मक कारण - प्रो. सूरजभान सिंह
11. भाषाविज्ञान के आधुनातन आयाम - डॉ. अंबादास देशमुख
12. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिंदी - राजेंद्र प्रसाद सिंह
13. भाषा विज्ञान: सैद्धांतिक चिंतन - रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
14. भाषाशास्त्र के सूत्रधार - रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
15. भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा - लक्ष्मीकांत पाण्डेय/प्रमिला अवस्थी

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष / प्रथम अयन

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट
HIN-506-MJ	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य	4

लक्ष्य (Aim) :

भारतीय साहित्य के विकास में प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। हिंदी साहित्य का प्रारंभ ही प्राचीन काव्य से माना जाता है। राजनीतिक उथल-पुथल के बीच में भी इस युगीन साहित्य ने अपने समय की सच्चाई को प्रामाणिकता से अभिव्यक्त किया है। रासो साहित्य, धार्मिक साहित्य, लौकिक साहित्य, गद्य साहित्य, प्रेम साहित्य आदि साहित्य प्राचीन काव्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस साहित्य से तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों का परिचय मिलता है। पृथ्वीराज रासो, विद्यापति पदावली एवं अमीर खुसरो की पहेलियाँ-मुकरियाँ इस दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है। इसमें वीर एवं शृंगार रस का अद्‌भुत समन्वय हुआ है। भारतीय प्राचीन इतिहास को जानने की दृष्टि से भी यह काव्य महत्वपूर्ण है।

हिंदी का मध्यकालीन युग हिंदी का स्वर्णयुग माना जाता है। यह भक्ति की महत्ता स्थापित करने की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इसी समय संपूर्ण भारत में भक्ति आंदोलन की लहर शुरू हुयी। हिंदी में कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास, मीरांबाई आदि कवियों के काव्य ने इस भक्ति आंदोलन को भारतव्यापी बनाया। यह युग आम समाज केलिए कष्टप्रद था। प्रजा दीन-हीन, लाचार-बेबस होकर जी रही थी. उनके भीतर की आस्था और विश्वास खो गया था। मध्यकालीन काव्य ने उनके भीतर चेतना और जीने की उर्जा निर्माण की। इस काव्य में भारत का संपूर्ण जीवन दर्शन समाहित है। प्रेम, त्याग, करुणा, अहिंसा, समन्वयशीलता, मानवता, मनुष्यता आदि वैश्विक एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना इस काव्य का प्रतिपाद्य है। सगुण एवं निर्गुण भक्ति भाव के इस काव्य ने संपूर्ण मानव जाति को आचरण की सभ्यता का पाठ पढ़ाया है। भक्ति की धारा के बीच कवि भूषण ने भी अपनी वीर रस की कविताओं से मध्ययुगीन इतिहास को सच्चाई से अभिव्यक्त किया है। यह काव्य अपनी मानवीय विरासत की बदौलत आज भी प्रासंगिक है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

छात्र प्राचीन और मध्ययुगीन काव्य को जन्म देने वाली परिस्थितियों का परिचय प्राप्त करेंगे।

हिंदी साहित्य के प्रारंभिक युग का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

प्राचीन और मध्ययुगीन काव्य का परिचय प्राप्त करेंगे।

प्राचीन और मध्ययुगीन काव्य की विशेषताओं से अवगत होंगे।

प्राचीन और मध्ययुगीन काव्य के प्रमुख कवियों का परिचय प्राप्त करेंगे।

प्राचीन और मध्ययुगीन काव्य परंपरा से अवगत होंगे।

भक्ति आंदोलन के स्वरूप और महत्व को समझेंगे।

भक्ति काव्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक विरासत को जानेंगे।

प्राचीन और मध्ययुगीन काव्य में निहित मूल्यों को समझेंगे।

प्राचीन और मध्ययुगीन कवियों के प्रदेय अंकित कर सकेंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING
[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Critical Thinking	Moral & Ethical Values	Communication Skills	Life-long Learning	Evaluating Skills	Analytical Reasoning	Research-related skills	Professional Skills	Self Directed Learning	Domen Knowledge	Critical Thinking	Life Skills	Application of Knowledge	Synthesis of Knowledge	Research Aptitude	Employment Skills	Digital Literacy	Recreational Skills	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5	PSO-6	PSO-7	PSO-8	PSO-9	PSO-10
CO-1	3		1			2	2				3	2			2	1				
CO-2	3		1			2	2				3	2				1				
CO-3	3	2	1			2	2				3	2				1				
CO-4	3	2	2			2	2				3	2			2	1				
CO-5	3	2	2			2	2				3	2				1				2
CO-6	3		1			2	2				3	2			2	1				
CO-7	3	2	2			2	2				3	2				1				2
CO-8	3	2	3			2	2				3	2				1				2
CO-9	3	1	3			2	2				3	2			2	1				2
CO-10	3	2	2			3	2				3	2			2	1				
Wgt Avg	3	1.8	1.8			2.1	2				3	2			2	1				2

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, सर्वेक्षण विधि ।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – I	प्राचीन काव्य चंदबरदायी – पृथ्वीराज रासो – रेवातट अमीर खुसरो के पद अ) पहेलियाँ अंतर्लिपिका : 1, 12, 15, 17, 28 = 05 बहिर्लिपिका : 13, 20, 23, 26, 37 = 05 आ) मुकरियाँ 7, 9, 11, 15, 19, 30, 48, 55, 63, 70 = 10	15 तासिकाएँ
इकाई – II	पूर्वमध्यकालीन काव्य (कबीर/जायसी) कबीर – सं. हजारीप्रसाद द्विवेदी – पदसंख्या 171 से 180 कबीर की काव्यकला, भाषा, समन्वय, मानवता, लोकमंगल जायसी – पद्मावत नागमती वियोग खंड (आरंभ के 11 से 19) जायसी की काव्यकला, भाषा, समन्वय, विरह वर्णन, लोकतत्व	15 तासिकाएँ
इकाई – III	सूरदास – भ्रमरगीत सार – सं. रामचंद्र शुक्ल (पद 31 से 40) सूरदास की काव्यकला, भाषा, समन्वय, लोकमंगल, विरह वर्णन। तुलसीदास – रामचरितमानस – उत्तरकाण्ड (आरंभ के 26 से 50) तुलसीदास की काव्यकला, भाषा, लोकमंगल, समन्वय, भक्ति, आदर्श कल्पना।	15 तासिकाएँ
इकाई – IV	पूर्वमध्यकालीन काव्य (मीराँ/भूषण) मीराँ – सं. विश्वनाथ त्रिपाठी – (आरंभ के 11 से 20 पद) मीराँ की काव्यकला, भाषा, प्रेमतत्व, प्रगतिशीलता, विरह वर्णन। भूषण : भूषण की काव्यकला, भाषा, नीतितत्व, समन्वय, राष्ट्रप्रेम (पद 1 से 25)	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन 100 अंक

आंतरिक मूल्यांकन : 50 अंक (लघुत्तरी परीक्षा 20 अंक, शोध परियोजना- 20 अंक, मौखिक प्रस्तुति/क्षेत्र भेट (अध्ययन यात्रा) /साक्षात्कार- 10 अंक)

सत्रांत परीक्षा : 50 अंक

सत्रांत परीक्षा के प्रश्नपत्र का स्वरूप -

प्रश्न 1. इकाई-1 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न।   (10 अंक)

प्रश्न 2. इकाई-2 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न।   (10 अंक)

प्रश्न 3. इकाई-3 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न।   (10 अंक)

प्रश्न 4. इकाई-4 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न।   (10 अंक)

प्रश्न 5. इकाई-1,2,3,4 पर टिप्पणीयाँ। (चार में से दो) (हर इकाई पर एक-एक टिप्पणी) (10 अंक)

संदर्भ ग्रंथ :

1. कबीर – हजारीप्रसाद द्विवेदी
2. जायसी ग्रंथावली – सं. रामचंद्र शुक्ल
3. संक्षिप्त सूरसारगर – सं. डॉ. प्रेमनारायण टंडन
4. मीराबाई की पदावली – सं. परशुराम चतुर्वेदी
5. महाकवि भूषण – सं. भगीरथ प्रसाद दीक्षित
6. काव्य की भूमिका – रामधारी सिंह दिनकर
7. घनानंद कवित्त – चंद्रशेखर मिश्र शास्त्री
8. साहित्य और मानवीय संवेदना – डॉ. सदानंद भोसले
9. जायसी के पद्मावत का मूल्यांकन – प्रो. हरेंद्रप्रताप सिन्हा
10. महाकवि जायसी और उनका काव्य – डॉ. इकबाल अहमद
11. मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य – डॉ. शिवसहाय पाठक.
12. जायसी पद्मावत काव्य और दर्शन – डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
13. पद्मावत में काव्य, संस्कृति और दर्शन – डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
14. पद्मावत का काव्य सांदर्य – डॉ. चंद्रबली पाण्डेय
15. हिंदी के प्रतिनिधि कवि – डॉ. सुरेश अग्रवाल
16. कबीर साहित्य का चिंतन – संपा. प्रा. दत्तात्रय टिळेकर
17. अमीर खुसरो और उनका हिंदी साहित्य – संपा. भोलानाथ तिवारी।

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट
HIN-507-MJ	हिंदी नाटक (प्रायोगिक)	4 P

उद्देश्य :

1. विद्यार्थियों में अभिनय कला का विकास करना।

2. हिंदी नाटक की मंचीय समझ विकसित करना।

3. संवाद-अभिनय, निर्देशन एवं प्रस्तुतीकरण कौशल विकसित करना।

4. रंगमंचीय तकनीकों का ज्ञान देना।

5. नाट्य-साहित्य के व्यावहारिक अध्ययन को प्रोत्साहित करना।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Critical Thinking	Moral & Ethical Values	Communication Skills	Life-long Learning	Evaluating Skills	Analytical Reasoning	Research-related skills	Professional Skills	Self Directed Learning	Domen Knowledge	Critical Thinking	Life Skills	Application of Knowledge	Synthesis of Knowledge	Research Aptitude	Employment Skills	Digital Literacy	Recreational Skills	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5	PSO-6	PSO-7	PSO-8	PSO-9	PSO-10
CO-1	3	2					2				3	2			2					
CO-2	3	2	2			2	2				3	2			2					
CO-3	3	2	2			2	2				3	2			2					2
CO-4	3	2	2			2	2				3	2			2					2
CO-5	3	2	3			2	2				3	2								2
CO-6	3	2					2				3	1			2					
CO-7	3	3					2				3	2			2					
CO-8	3	2				3	2				3	2								
CO-9	3	2				3	2				3	2								
CO-10	3			2			2				3	2			2					
Wgt Avg	3	2.1	2.25	2		2	2				2	1.9			2					2

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

प्रत्यक्ष कार्य विधि ।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – I	1 : वाचन एवं संवाद प्रस्तुति प्रसिद्ध हिंदी नाटकों के अंशों का वाचन। 2. संवादों का शुद्ध उच्चारण। 3. भावानुसार संवाद प्रस्तुति। 4. स्वर, गति, विराम का अभ्यास।	15 तासिकाएँ
इकाई – II	अभिनय प्रशिक्षण 1. एकल अभिनय (Mono Acting) 2. समूह अभिनय 3. भावाभिनय 4. पात्रानुकूल हाव-भाव और देहभाषा 5. मंच पर आत्मविश्वास निर्माण	15 तासिकाएँ
इकाई – III	मंचन कौशल 1. मंच सज्जा का प्रारंभिक ज्ञान 2. वेशभूषा एवं मेकअप 3. प्रकाश व्यवस्था का परिचय 4. ध्वनि एवं संगीत संयोजन 5. प्रवेश एवं निकास तकनीक	15 तासिकाएँ
इकाई – IV	बहु की विदा -एकांकी का मंचन कहै कबीर सुनो भाई साधो – नाटक का मंचन	15 तासिकाएँ

मूल्यांकन पद्धति (100 अंक)

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट
HIN-508-MJ	हिंदी व्यावहारिक व्याकरण	2

लक्ष्य (Aim) :

जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप और प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है उसे व्याकरण कहते हैं। व्याकरण के नियम बहुधा लिखी हुई भाषा के आधार पर निश्चित किए जाते हैं। उनमें शब्दों का प्रयोग बोली हुई भाषा की अपेक्षा अधिक सावधानी से किया जाता है। व्याकरण शब्द का अर्थ- 'भली-भांति समझना' है। व्याकरण में वह नियम समझाए जाते हैं जो प्रबुद्ध जनों के द्वारा स्वीकृत शब्दों के रूपों और प्रयोगों में दिखाई देते हैं।भाषा में यह भी देखा जाता है कि कई शब्द दूसरे शब्दों से बनते हैं और उनमें एक नया ही अर्थ पाया जाता है। वाक्य में शब्दों का उपयोग किसी विशेष क्रम से होता है और उनमें रूप अथवा अर्थ के अनुसार परस्पर संबंध रहता है।इस अवस्था में आवश्यक है कि पूर्णता और स्पष्टता पूर्वक विचार प्रकट करने के लिए शब्दों के रूप में तथा प्रयोगों में स्थिरता और समानता हो। व्याकरण द्वारा इस समस्या का हल समय-समय पर खोजा जाता है।व्याकरण भाषा संबंधी शास्त्र है और भाषा का मुख्य अंग वाक्य है। वाक्य शब्दों से बनता है और शब्द मूल ध्वनियों से लिखी हुई भाषा में एक मूल ध्वनि के लिए एक चिह्न रहता है जिसे वर्ण कहते हैं।

वर्ण, शब्द और वाक्य के विचार से व्याकरण के मुख्य तीन विभाग होते हैं- वर्ण विचार, शब्द साधन, वाक्य विन्यास। समय-समय पर भाषा में परिवर्तन होता है। भाषा पहले और व्याकरण बाद में आता है। समय-समय पर भाषा में जो बदलाव हुए हैं उन बदलावों को भाषा के लिखित रूप में सुनिश्चित कराने हेतु व्याकरण के अध्ययन की आवश्यकता होती है।एम.ए.स्तर पर हिंदी व्याकरण का अध्ययन भाषा विश्लेषण एवं सृजनात्मकता के लिए आवश्यक है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

छात्र भाषा और व्याकरण का महत्व अंकित करेंगे।

हिंदी भाषा की संरचना से अवगत होंगे।

भाषा में शुद्धता का महत्व समझेंगे।

हिंदी भाषा की लिंग, वचन व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

हिंदी भाषा की कारक व्यवस्था का परिचय प्राप्त करेंगे।

हिंदी भाषा के अवयाय शब्दों का परिचय प्राप्त करेंगे।

विशुद्ध हिंदी वर्तनी के प्रति जागरूक होंगे।

लेखन कौशल का विकास होगा।

भाषा प्रयोग का महत्व समझेंगे।

हिंदी भाषा के व्यावहारिक व्याकरण का प्रयोग कर सकेंगे

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING
[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Critical Thinking	Moral & Ethical Values	Communication Skills	Life-long Learning	Evaluating Skills	Analytical Reasoning	Research-related skills	Professional Skills	Self Directed Learning	Domen Knowledge	Critical Thinking	Life Skills	Application of Knowledge	Synthesis of Knowledge	Research Aptitude	Employment Skills	Digital Literacy	Recreational Skills	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5	PSO-6	PSO-7	PSO-8	PSO-9	PSO-10
CO-1	3			2	2				2	2	3		2	3	2		2			
CO-2	3			2	2				2	2	3		2	3	2		2			
CO-3	3			2	2				2	2	3		3	3	2		2			
CO-4	3			1	2				2	2	3		1	3	2		2			
CO-5	3			1	2				2	2	3		1	3	2		2			
CO-6	3			1	2	3			2	2	3		1	3	2		2			
CO-7	3			2	3	3			2	3	3		3	3	2		2			
CO-8	3			3	3	3			2	3	3		3	3	2		2			
CO-9	3			3	3	3			2	3	3		3	3	2		2			
CO-10	3			1	3				2	3	3		2	3	2		2			
Wgt Avg	3			1.8	2.4	3			2	2.4	3		2.1	3	2		2			

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, तुलनात्मक विधि, प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	**पाठ्यविषय**	**तासिकाएँ**
इकाई – I	शब्द साधन : संज्ञा परिभाषा और उसके भेद . सर्वनाम: परिभाषा, सर्वनाम के भेद: विशेषण: परिभाषा, विशेषण के भेद: गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक। लिंग: परिभाषा, लिंग के भेद: पुलिंग, स्त्रीलिंग। वचन: परिभाषा। वचन के भेद: एकवचन, बहुवचन। कारक: परिभाषा। कारक के भेद, विभक्ति चिह्न। कारक भेद: कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक।	15 तासिकाएँ
इकाई-II	क्रिया: परिभाषा, धातु: धातु के भेद- प्रेरणार्थक धातु, नाम धातु, संयुक्त धातु। क्रिया के भेद: सकर्मक क्रिया, अकर्मक क्रिया, संयुक्त क्रिया। संधि: परिभाषा, संधि के भेद: स्वर संधि, व्यंजन संधि,विसर्ग संधि। समास: परिभाषा, समास के भेद:अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वंद्व, बहुव्रीहि। अलंकर और उसके भेद	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन 50 अंक :

आंतरिक मूल्यांकन : 25 अंक (लघुत्तरी परीक्षा 10 अंक, शोध परियोजना- 10 अंक, मौखिक प्रस्तुति/क्षेत्र भेट (अध्ययन यात्रा) /साक्षात्कार- 05 अंक)

सत्रांत परीक्षा : 25 अंक

सत्रांत परीक्षा के प्रश्नपत्र का स्वरूप -
प्रश्न 1. इकाई-1 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)
प्रश्न 2. इकाई-2 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)
प्रश्न 3.इकाई-1,2 पर टिप्पणीयाँ। (दो में से एक) (हर इकाई पर एक-एक टिप्पणी) (05 अंक)

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी व्याकरण-कामता प्रसाद गुरु, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली 2020
2. विशुद्ध हिंदी भाषा- सदानंद भोसले, विकास प्रकाशन, कानपुर 2007
3 हिंदी भाषा शिक्षण- संपादक: सदानंद भोसले, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष / प्रथम अयन

अ. क्र.	Major Elective Mandatory (one)	क्रेडिट
HIN-512-MJ	हिंदी नाटक और रंगमंच	2T

लक्ष्य (Aim) :

हिंदी नाटक लिखने की परंपरा आधुनिक युग में आरंभ हुई है। इससे पूर्व लिखे गए नाटकों में नाटक कला के तत्वों का अभाव दिखाई देता है। आधुनिक युग के पूर्व लिखे गए नाटक एक तो नाटकीय काव्य है या संस्कृत नाटकों के अनुवाद है। हिंदी में नाट्य लेखन की शुरुआत सही अर्थों में भारतेंदु युग से हुई है। नाटक साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन के साथ समाज तक कोई महत्वपूर्ण संदेश पहुंचाना रहा है। नाटककार नाटक के माध्यम से मानव जीवन की विविध परिस्थितियां अथवा विविध मानसिक अवस्थाओं का चित्रण करता है। इस कारण पाठक या दर्शक अपनी समकालीन समस्याओं से अवगत होता है। इससे स्पष्ट है कि नाटक जन जागरण का महत्वपूर्ण कार्य करता है।

नाटक मूलतः रंगमंचीय कला है। इसी कारण नाटक का केवल लिखित रूप तक सीमित रहना सफल नहीं कहा जा सकता। उसकी असली सफलता रंगमंच पर प्रस्तुत होने में है। रंगमंच लिखित नाटक को दृश्य रूप में आयाम देता है, वह शब्दों से भी कहीं अधिक जीवंत होता है। पाठक नाटक के लिखित रूप में से कई गुना अधिक उसके रंगमंचीय प्रदर्शन द्वारा प्रभावित होता है, लेकिन इससे नाटक के साहित्यिक स्वरूप की महत्ता जरा भी कम नहीं होती। स्पष्ट है नाटक केवल पठनीय साहित्य नहीं है बल्कि उससे रंगमंचीय प्रदर्शन की अपेक्षा होती है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

छात्र हिंदी नाटक विधा का परिचय प्राप्त करेंगे।

हिंदी नाटक विधा के स्वरूप एवं संरचना से अवगत होंगे।

हिंदी नाटक विधा के विकास क्रम को जानेंगे।

हिंदी नाटक और रंगमंच की विकास यात्रा से परिचित होंगे।

भारतीय एवं पाश्चात्य रंगमंच की अवधारणा और उपयोगिता समझेंगे।

हिंदी नाटकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे।

हिंदी नाटकों की समीक्षा कर सकेंगे।

पठित नाटककारों का प्रदेय अंकित करेंगे।

हिंदी नाटकों में अभिव्यक्त मूल्य अंकित कर सकेंगे।

नाटक कला में रुचि उत्पन्न होगी।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Critical Thinking	Moral & Ethical Values	Communication Skills	Life-long Learning	Evaluating Skills	Analytical Reasoning	Research-related skills	Professional Skills	Self Directed Learning	Domen Knowledge	Critical Thinking	Life Skills	Application of Knowledge	Synthesis of Knowledge	Research Aptitude	Employment Skills	Digital Literacy	Recreational Skills	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5	PSO-6	PSO-7	PSO-8	PSO-9	PSO-10
CO-1	3										3									
CO-2	3						2				3									
CO-3	3						2				3									
CO-4	3						2				3									
CO-5	3			2			2		2		3			2			2			
CO-6	3	3					2				3	3		2	2	2				
CO-7	3	3	2			3	2				3	3			2	2				
CO-8	3	3	2			3	2				3	3			2					
CO-9	3	3	2			3	2				3	3								2
CO-10	3			2							3			2			2		2	2
Wgt Avg	3	3	2	2		3	2		2		3	3		2	2	2	2		2	2

शिक्षा विधि (Pedagogy):

व्याख्यान पद्धति, अर्थ कथन विधि, प्रयोग विधि, कक्षाभिनय विधि, संवाद प्रस्तुति विधि, अध्ययन यात्रा पद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – I	नाटक अर्थ परिभाषा एवं स्वरुप नाटक के तत्व हिंदी रंगमंच का विकासक्रम नाटक की भारतीय परंपरा पारसी थिएटर, मराठी नाट्य परंपरा।	15 तासिकाएँ
इकाई – III	निर्धारित नाटक आषाढ का एक दिन – मोहन राकेश कथ्यगत अध्ययन, रंगमंचीय अध्ययन, तात्विक मूल्यांकन। निर्धारित नाटक काली बर्फ – मीरा कांत कथ्यगत अध्ययन तात्विक मूल्यांकन।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन 50 अंक

आंतरिक मूल्यांकन : 25 अंक (लघुत्तरी परीक्षा 10 अंक, शोध परियोजना- 10 अंक, मौखिक प्रस्तुति/क्षेत्र भेट (अध्ययन यात्रा) /साक्षात्कार- 05 अंक)

सत्रांत परीक्षा : 25 अंक

सत्रांत परीक्षा के प्रश्नपत्र का स्वरूप -

प्रश्न 1. इकाई-1 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 2. इकाई-2 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 5. इकाई-1,2,पर टिप्पणीयाँ। (दो में से एक) (हर इकाई पर एक-एक टिप्पणी) (05अंक)

संदर्भ ग्रंथ :

1. आषाढ का एक दिन – मोहन राकेश
2. काली बर्फ – मीरा कांत
3. नाटक और रंगमंच – संपा. गिरिश रस्तोगी
4. रंग दर्शन – नेमिचंद्र जैन
5. हिंदी नाटक : उद्भव और विकास – दशरथ ओझा
6. हिंदी नाट्य विमर्श – संपा. सदानंद भोसले
7. रंगभाषा – नेमिचंद्र जैन
8. रंगमंच - बलवंत गार्गी
9. मोहन राकेश : रंग-शिल्प और प्रदर्शन – जयदेव तनेजा
10. रंगमंच का सौंदर्य शास्त्र – देवेन्द्रराज अंकुर
11. रंग दर्शन – नेमिचंद्र जैन

अ. क्र.	Major Elective Mandatory (one)	क्रेडिट
HIN-513-MJ	हिंदी नाटक और रंगमंच प्रायोगिक	2P

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

प्रत्यक्ष कार्यपद्धति, अध्ययन यात्रा पद्धति।

इकाई	**पाठ्यविषय**	**तासिकाएँ**
इकाई – I	आषाढ का एक दिन – मोहन राकेश मंचीय प्रस्तुति नाटक का सामूहिक वाचन प्रमुख पात्रों के चरित्र- अभिनय कालिदास, मल्लिका, विलोम, अम्बिका प्रमुख दृश्यों का संवाद अभिनय भावत्मक संषर्ष , मंच सज्जा, प्रकाश ध्वनी योजना आदि का अभ्यास	15 तासिकाएँ
इकाई – II	आधे- अधूरे – मोहन राकेश नाटक का सामूहिक वाचन प्रमुख पत्रों के चरित्र- अभिनय सावित्री, महेन्द्रनाथ, बिन्नी, अशोक सावित्री महेंद्र के संवादों का अभिनय परिवार के तनावपूर्ण दृश, पत्रों का मनोवैज्ञानिक द्वद्व , भाषा, वेशभूषा मंच सज्जा, प्रकाश ध्वनी योजना आदि का अभ्यास	15 तासिकाएँ

एम. ए. साहित्य प्रथम वर्ष / प्रथम अयन

अ. क्र.	Major Elective Mandatory (one)	क्रेडिट
HIN-514-MJ	हिंदी भाषा शिक्षण	2T

लक्ष्य (Aim) :

भाषा मानव मस्तिष्क की उपज है। भाषा मानव जीवन का प्रमुख प्रवाह है- निरंतर गतिशील, अनुपम और चमत्कारी भाषा मानव को अन्य जीव धारियों से अलग करती है। मानव सभ्यता और संस्कृति का अविरल विकास भाषा के बिना संभव ना हुआ होता। भाषा की सहायता से चिंतन मनन होता है। कल्पना की ऊंची उड़ान भाषा के पंखों से ही संभव है। भाषा के द्वारा ही विचार, विनिमय, तर्क-वितर्क और हास-परिहास होता है।भाषा ही मनुष्य को वास्तविक अर्थों में सामाजिक प्राणी बनाती है। भाषा संभाषण के लिए प्रयुक्त होती है।

भाषा की संप्रेषणात्मक शक्ति ही भाषा को अपरिमित शक्ति संपन्न बनाती है।मानव भाषा का मूल आधार संप्रेषण है। भाषा शिक्षण आधुनिक युग में मानव के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। अनेक अध्यापक भाषा शिक्षण के अनवरत अनुष्ठान में लगे हैं। सरकार, प्रकाशक, लेखक, विद्वान और अन्य अनेक सहायक भाषा शिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत हैं। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भाषा शिक्षण के क्षेत्र में अभूतपूर्व हलचल हुई है ।भाषा अर्जन और भाषा अधिगम के विषय में विस्तार से चर्चा की गई। भाषा चिंतन की नवीन दिशा में अनेक विधियों को प्रस्तुत किया गया जिनका प्रयोग आज अध्ययन और अनुसंधान से आगे जाकर भाषा शिक्षण के लिए हो रहा है। भाषा अर्जन और भाषा अधिगम के मूलभूत अंतर को भाषा शिक्षण के संदर्भ में देखने से यह ज्ञात होता है कि भाषा अर्जन बालक समाज में करता है।वह अपनी भाषा, मातृभाषा या प्रथम भाषा को ग्रहण करता है।इसे भाषा वैज्ञानिक भाषा का अर्जन करना मानते हैं। मातृभाषा सीखने के पश्चात बालक जब किसी दूसरी भाषा को सीखता है तब उसे भाषा अधिगम का नाम दिया जाता है। मातृभाषा का प्रथम भाषा के संबंध में अर्जन और अन्य भाषा के संदर्भ में अधिगम शब्द का प्रयोग होता है। भारत बहुभाषिक देश है और तमाम भारतीय भाषाओं के बीच हिंदी सांस्कृतिक आदान-प्रदान का काम करती है। इसलिए हिंदी भाषा शिक्षण एम.ए.के स्तर पर पढ़ाया जाना चाहिए।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

छात्र हिंदी भाषा शिक्षण की अवधारणा को समझेंगे।

हिंदी भाषा शिक्षण की सैद्धांतिक जानकारी प्राप्त करेंगे।

विभिन्न भाषा प्रकारों का परिचय प्राप्त करेंगे।

भाषा शिक्षण की प्रक्रिया को समझेंगे।

हिंदी भाषा कौशलों का परिचय प्राप्त करेंगे।

भाषा शिक्षण प्रणाली को जानेंगे।

भाषा शिक्षण में उपयोगी साधन सामग्री को जानेंगे।

कंप्यूटर और भाषा शिक्षण विधि को समझेंगे।

अध्ययन अध्यापन में भाषा शिक्षण का महत्व अंकित करेंगे।

हिंदी भाषा शिक्षण और उसके व्यावहारिक प्रयोग कर सकेंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Critical Thinking	Moral & Ethical Values	Communication Skills	Life-long Learning	Evaluating Skills	Analytical Reasoning	Research-related skills	Professional Skills	Self Directed Learning	Domen Knowledge	Critical Thinking	Life Skills	Application of Knowledge	Synthesis of Knowledge	Research Aptitude	Employment Skills	Digital Literacy	Recreational Skills	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5	PSO-6	PSO-7	PSO-8	PSO-9	PSO-10
CO-1	3			2	2					2	3		2	3	2					
CO-2	3			2	2					2	3		2	3	2					
CO-3	3	2		2							3			1	2					
CO-4	3	2		2	2					2	3		2	3	2					
CO-5	3	2		2	2					2	3		2	3	2					
CO-6	3	2		2	2					2	3		2	3	2					
CO-7	3			2							3		3	2						
CO-8	3			2	2				2	2	3		3	3			2	2		
CO-9	3			2		2			2	3	3		2	2			1			
CO-10	3			2		2			2	3	3		2	2			1			
Wgt Avg	3	2		2	2	2			2	2.2	3		2.2	2.2	2		13	2		

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान पद्धति, विश्लेषण विधि, प्रत्यक्ष कार्यपद्धति, अध्ययन यात्रा पद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – I	भाषा शिक्षण : स्वरूप और उद्देश्य भाषा शिक्षण की आवश्यकता एवं महत्व भाषा के प्रमुख कार्य भाषा और समाज भाषा और संस्कृति	15 तासिकाएँ
इकाई – II	भाषा कौशल और विकास : श्रवण, भाषण, वाचन तथा लेखन। भाषा शिक्षण संदर्भ में भाषा प्रकार : मातृभाषा द्वितीय भाषा : भाषा शिक्षण की प्रक्रिया विदेशी भाषा : भाषा शिक्षण की प्रक्रिया माध्यम के रूप में भाषा।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन 50 अंक

आंतरिक मूल्यांकन : 25 अंक (लघुत्तरी परीक्षा 10 अंक, शोध परियोजना- 10 अंक, मौखिक प्रस्तुति/क्षेत्र भेट (अध्ययन यात्रा) /साक्षात्कार- 05 अंक)

सत्रांत परीक्षा : 25 अंक

सत्रांत परीक्षा के प्रश्नपत्र का स्वरूप -

प्रश्न 1. इकाई-1 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 2. इकाई-2 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 5. इकाई-1,2,पर टिप्पणीयाँ। (दो में से एक) (हर इकाई पर एक-एक टिप्पणी) (05अंक)

संदर्भ ग्रंथ :

1. अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान : सिद्धांत और प्रयोग – रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
2. हिंदी भाषा : स्वरूपऔर विकास – कैलाशचंद्र भाटिया
3. हिंदी शिक्षण – मनोरमा शर्मा
4. हिंदी भाषा शिक्षण – भोलानाथ तिवारी, कैलाश भाटिया
5. हिंदी शिक्षण – उषा सिंहल
6. हिंदी शिक्षण – केशव प्रसाद
7. हिंदी शिक्षण – डॉ. जयनारायण कौशिक
8. हिंदी शिक्षण : अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य – सं. सतीशकुमार रोहरा

□ □ □

एम. ए. साहित्य प्रथम वर्ष / प्रथम अयन

अ. क्र.	Major Elective Mandatory (one)	क्रेडिट
HIN-515-MJ	हिंदी भाषा शिक्षण (प्रायोगिक)	2P

लक्ष्य (Aim) :

भाषा मानव मस्तिष्क की उपज है। भाषा मानव जीवन का प्रमुख प्रवाह है- निरंतर गतिशील, अनुपम और चमत्कारी भाषा मानव को अन्य जीव धारियों से अलग करती है। मानव सभ्यता और संस्कृति का अविरल विकास भाषा के बिना संभव ना हुआ होता। भाषा की सहायता से चिंतन मनन होता है। कल्पना की ऊंची उड़ान भाषा के पंखों से ही संभव है। भाषा के द्वारा ही विचार, विनिमय, तर्क-वितर्क और हास-परिहास होता है।भाषा ही मनुष्य को वास्तविक अर्थों में सामाजिक प्राणी बनाती है। भाषा संभाषण के लिए प्रयुक्त होती है।

भाषा की संप्रेषणात्मक शक्ति ही भाषा को अपरिमित शक्ति संपन्न बनाती है।मानव भाषा का मूल आधार संप्रेषण है। भाषा शिक्षण आधुनिक युग में मानव के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। अनेक अध्यापक भाषा शिक्षण के अनवरत अनुष्ठान में लगे हैं। सरकार, प्रकाशक, लेखक, विद्वान और अन्य अनेक सहायक भाषा शिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत हैं। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भाषा शिक्षण के क्षेत्र में अभूतपूर्व हलचल हुई है।भाषा अर्जन और भाषा अधिगम के विषय में विस्तार से चर्चा की गई। भाषा चिंतन की नवीन दिशा में अनेक विधियों को प्रस्तुत किया गया जिनका प्रयोग आज अध्ययन और अनुसंधान से आगे जाकर भाषा शिक्षण के लिए हो रहा है। भाषा अर्जन और भाषा अधिगम के मूलभूत अंतर को भाषा शिक्षण के संदर्भ में देखने से यह ज्ञात होता है कि भाषा अर्जन बालक समाज में करता है।वह अपनी भाषा, मातृभाषा या प्रथम भाषा को ग्रहण करता है।इसे भाषा वैज्ञानिक भाषा का अर्जन करना मानते हैं। मातृभाषा सीखने के पश्चात बालक जब किसी दूसरी भाषा को सीखता है तब उसे भाषा अधिगम का नाम दिया जाता है। मातृभाषा का प्रथम भाषा के संबंध में अर्जन और अन्य भाषा के संदर्भ में अधिगम शब्द का प्रयोग होता है। भारत बहुभाषिक देश है और तमाम भारतीय भाषाओं के बीच हिंदी सांस्कृतिक आदान-प्रदान का काम करती है। इसलिए हिंदी भाषा शिक्षण एम.ए.के स्तर पर पढ़ाया जाना चाहिए।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

छात्र हिंदी भाषा शिक्षण की अवधारणा को समझेंगे।

हिंदी भाषा शिक्षण की सैद्धांतिक जानकारी प्राप्त करेंगे।

विभिन्न भाषा प्रकारों का परिचय प्राप्त करेंगे।

भाषा शिक्षण की प्रक्रिया को समझेंगे।

हिंदी भाषा कौशलों का परिचय प्राप्त करेंगे।

भाषा शिक्षण प्रणाली को जानेंगे।

भाषा शिक्षण में उपयोगी साधन सामग्री को जानेंगे।

कंप्यूटर और भाषा शिक्षण विधि को समझेंगे।

अध्ययन अध्यापन में भाषा शिक्षण का महत्व अंकित करेंगे।

हिंदी भाषा शिक्षण और उसके व्यावहारिक प्रयोग कर सकेंगे।

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

प्रत्यक्ष कार्यपद्धति, अध्ययन यात्रा पद्धति।

इकाई	**पाठ्यविषय**	**तासिकाएँ**
इकाई – I	भाषा शिक्षण : स्वरूप और उद्देश्य पर चर्चा श्रवण कौशल भाषण कौशल पठन कौशल उच्चारण एवं वाचन शब्द भंडार का विकास	15 तासिकाएँ
इकाई – II	ICT एवं डिजिटल हिंदी भाषा शिक्षण पॉवर पॉइंट तैयार करना हिंदी टायपिंग का अभ्यास ओडियो विडिओ सामग्री का उपयोग ऑनलाइन क्विज तैयार करना कार्यक्रम पत्रिका तैयार करना	15 तासिकाएँ

एम. ए. साहित्य प्रथम वर्ष / प्रथम अयन

अ. क्र.	Research Methodolgy	क्रेडिट
HIN-541-RM	शोध प्रविधि (Research Methodolgy)	4

लक्ष्य (Aim) :

आवश्यकता अविष्कार की जननी है। समाज के प्रत्येक क्षेत्र की आवश्यकता शोध द्वारा पूर्ण की जाती है। मानव समाज के विकास एवं समस्या निवारण के लिए तथा सुंदर जीवन के लिए शोध की आवश्यकता होती है। मानव मस्तिष्क में स्वभावतः नई नई जिज्ञासा का निर्माण होता रहता है। मानव तर्कशील और प्रज्ञावान प्राणी होने के कारण व अपने जिज्ञासा से संबंधित क्षेत्र में नये प्रयोग द्वारा शोध मे प्रवृत्त रहता है। शोध के पीछे मनुष्य का प्रमुख उद्देश जीवन को अधिक सुखमय, सुंदर, उदात्त, विराट और सांस्कृतिक बनाना होता है। मनुष्य द्वारा किए जाने वाले शोध को मोटे तौर पर दो प्रकार मे विभाजित किया जाता है भौतिक और दार्शनिक (भौतिकेतर ,सांस्कृतिक) संस्कृति के समग्र विकास हेतु ज्ञानविज्ञान, दर्शन और साहित्य के क्षेत्र में शोध की मूलभूत अनिवार्यता है। संस्कृति और ज्ञान की शाश्वत प्रतिमान की पुष्टि और नवीन व्याख्या नवीन मूल्य और तथ्यों की खोज, विवादास्पद क्षेत्रों एवं विकल्पो के समाधान हेतु शोध की आवश्यकता है । किसी भी भाषा और साहित्य का शोध उस भाषा एवं साहित्य की जन संस्कृती की पौराणिकता, इतिहास, सम सामायिकता तथा भावी संभावनाओ के महत्व का अधिक दर्शन करता है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

छात्र शोध प्रविधि प्रविधि और प्रक्रिया का परिचय प्राप्त करेंगे।

शोध संबंधी तकनिकी जानकारी प्राप्त करेंगे।

शोध परियोजना बनाकर शोध कार्य करेंगे।

पुस्तक आलोचना कर सकेंगे।

शोधलेख लेखन और मूल्यांकन कला सीखेंगे।

शोध सहायक बनने के लिए आवश्यक क्षमता का विकास होगा।

शोध के विभिन्न क्षेत्र एवं प्रकारों से परिचित होंगे।

शोध संबंधी तर्क पद्धतियों का संश्लेषण कर सकेंगे।

शोध से संबंधित समस्याओं से अवगत होंगे।

शोध प्रबंध लेखन कला सीखेंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Critical Thinking	Moral & Ethical Values	Communication Skills	Life-long Learning	Evaluating Skills	Analytical Reasoning	Research-related skills	Professional Skills	Self Directed Learning	Domen Knowledge	Critical Thinking	Life Skills	Application of Knowledge	Synthesis of Knowledge	Research Aptitude	Employment Skills	Digital Literacy	Recreational Skills	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5	PSO-6	PSO-7	PSO-8	PSO-9	PSO-10
CO-1	3							3		2	3			2	2	2			2	
CO-2	3							3		2	3			2	2	2			2	
CO-3	3	2				2	2	3		3	3	2		2	3	3			2	
CO-4	3	2				2	2	3		3	3	2		2	3	3			2	
CO-5	3	2				3	2	3		3	3	3		2	3	3			2	
CO-6	3					3	2	3		2	3	2			2	3			2	
CO-7	3	2				2	2	3	2		3	2		2	2	3	2		2	
CO-8	3							3		2	3			2	3	3			2	
CO-9	3				2	2	2	3			3	2		3	3	3			2	
CO-10	3				1			3	2	3	3			3	3	3			2	
Wgt Avg	3	2			1.5	2.3	2	3	2	2.5	3	2.1		2.2	2.6	2.8	2		2	

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रत्यक्ष कार्य विधि ।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – I	शोध का स्वरूप : शोध के लिए प्रयुक्त विभिन्न शब्द एवं उनका औचित्य शोध की विभिन्न परिभाषाएँ और उनका विश्लेषण शोध के उद्देश्य, शोध की विवेचन पद्धति वस्तुनिष्ठ, तर्कसंगति , प्रमाणबद्धता।	15 तासिकाएँ
इकाई – II	शोध के मूलतत्व : शोध और आलोचना शोध के भेद : साहित्यिक, साहित्येतर साहित्यिक शोध के भेद : वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, अंतर्विद्याशाखीय, सर्वेक्षण शोध पद्धति।	15 तासिकाएँ
इकाई – III	शोध प्रकिर्या : विषय चयन, सामग्री संकलन के स्रोत मूल, सहायक, हस्तलेख संकलन एवं उपयोगिता। तर्क पद्धति : निगमनात्मक पद्धति (Deductive Method) और आगमनात्मक पद्धति (Inductive Method)। विवेचन, निष्कर्ष, स्थापना।	15 तासिकाएँ
इकाई – IV	शोध प्रबंध लेखन प्रणाली : शोध प्रबंध, शीर्षक निर्धारण, रूपरेखा, भूमिका लेखन, अध्याय विभाजन, उद्धरण, संदर्भ सूची, MLA पद्धति (Modern Language Association), सहायक ग्रंथ सूची, परिशिष्ट, वर्तनी सुधार, टंकण, यूनिकोड परिचय, पुस्तक समीक्षा लेखन, शोधालेख लेखन, साहित्यिक चोरी (Plagiarism)।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन 100 अंक

आंतरिक मूल्यांकन : 50 अंक (लघुत्तरी परीक्षा 20 अंक, शोध परियोजना- 20 अंक, मौखिक प्रस्तुति/क्षेत्र भेट (अध्ययन यात्रा) /साक्षात्कार- 10 अंक)

सत्रांत परीक्षा : 50 अंक

सत्रांत परीक्षा के प्रश्नपत्र का स्वरूप -

प्रश्न 1. इकाई-1 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न।   (10 अंक)

प्रश्न 2. इकाई-2 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न।   (10 अंक)

प्रश्न 3. इकाई-3 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न।   (10 अंक)

प्रश्न 4. इकाई-4 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न।   (10 अंक)

प्रश्न 5. इकाई-1,2,3,4 पर टिप्पणीयाँ। (चार में से दो) (हर इकाई पर एक-एक टिप्पणी) (10 अंक)

संदर्भ ग्रंथ :

1. शोध तंत्र और सिद्धांत – शैलकुमारी
2. शोध प्रविधि – डॉ. विनयमोहन शर्मा
3. अनुसंधान की प्रक्रिया – सुरेशचंद्र निर्मल
4. अनुसंधान के तत्व – विश्वनाथप्रसाद मिश्र
5. शोध प्रविधि – डॉ. विनयमोहन शर्मा

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष/द्वितीय अयन : 22 क्रेडिट

अ. क्र.	**Major Mandatory**	**क्रेडिट**	**पृष्ठ क्रमांक**
HIN-555MJ	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र	4 T	
HIN-556-MJ	भारतीय लोक साहित्य	4 T	
HIN-557-MJ	संवाद कौशल (प्रायोगिक)	4 P	
HIN-558-MJ	हिंदी आलोचना	2 T	
	Major Elective Mandatory (one)		
HIN-562-MJ	अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार Theory	2T	
HIN-563-MJ	अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार Practical	2P	
HIN-564-MJ	आधुनिक हिंदी कविता Theory	2T	
HIN-565-MJ	आधुनिक हिंदी कविता Practical	2P	
	Internship		
HIN-581-MJ	On Job Training [OJT / F T]	4	

□ □ □

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष / द्वितीय अयन

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट
HIN-555-MJ	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र	4

लक्ष्य (Aim) :

भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र भारतीय काव्यशास्त्र शब्द और उसकी अवधारणा का विकास, संस्कृत साहित्य की सुधीर्ग चिंतन परंपरा से जुड़ा हुआ है। जिस ज्ञान को प्राप्त कर कवि सुंदर कविता कर सकता है और काव्य का पूरा आनंद प्राप्त करता है वह ज्ञान है काव्यशास्त्र। काव्य के स्वरूप को समझना और उसके तत्वों का विश्लेषण करना इसी का

कार्य है। सच है कवि काव्य की संवेदना से युक्त होते हैं और भावक काव्यशास्त्र के ज्ञान से कभी साधारण जन की अपेक्षा भाव की अधिक आकांक्षा करता है। काव्य शास्त्रीय विचार परंपरा सिद्धांतों में विभक्त की जाती है। रस सिद्धांत, अलंकार सिद्धांत, रीति सिद्धांत, ध्वनि सिद्धांत, औचित्य सिद्धांत और वक्रोक्ति सिद्धांत।इस प्रकार लगभग दो हजार वर्षों की यह परंपरा रही है। पाश्चात्य काव्यशास्त्र की भी एक सुदीर्घ परंपरा रही है। पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, दर्शन, कला, विज्ञान आदि के मूल स्रोत का संधान करने वाले को अनिवार्यता मिस्र या यूनान को जानना होता है। पाश्चात्य काव्यशास्त्र ने विश्व काव्य मीमांसा के लिए बहुत कुछ दिया है।यह परंपरा प्लेट,अरस्तु, विलियम वड्‌र्सवर्थ, कॉलरीज,मैथ्यू अर्नाल्ड आदि के होते हुए वर्तमान समय तक विद्यमान रही है।काव्य मीमांसा, काव्य लेखन, काव्य आस्वादन आदि को लेकर इसने साहित्य जगत को ज्ञान से आलोकित किया है। एम. ए. स्तर पर पढ़ने वाले विद्यार्थियों को भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के ज्ञान से अभिभूत करने के लिए इस पाठ्यक्रम की आवश्यकता है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

छात्र भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का परिचय प्राप्त करेंगे।

भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र के विकासक्रम का आकलन करेंगे।

भारतीय और पाश्चात्य काव्य सिद्धांतों का परिचय प्राप्त करेंगे।

भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक परिचय प्राप्त होगा।

अतीत और वर्तमान की कृतियों के बीच आलोचनात्मक विश्लेषण की दृष्टि विकसित होगी।

भारतीय काव्यशास्त्रीय चिंतन परंपरा और सिद्धांतों का परिचय प्राप्त करेंगे।

पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय चिंतन परंपरा और सिद्धांतों का परिचय प्राप्त करेंगे।

भारतीय काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों का उपयोग साहित्य समीक्षा के लिए करेंगे।

पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों का उपयोग साहित्य समीक्षा के लिए करेंगे।

साहित्य समीक्षा तथा तर्कों के लिए काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों का संश्लेषण करेंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Critical Thinking	Moral & Ethical Values	Communication Skills	Life-long Learning	Evaluating Skills	Analytical Reasoning	Research-related skills	Professional Skills	Self Directed Learning	Domen Knowledge	Critical Thinking	Life Skills	Application of Knowledge	Synthesis of Knowledge	Research Aptitude	Employment Skills	Digital Literacy	Recreational Skills	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5	PSO-6	PSO-7	PSO-8	PSO-9	PSO-10
CO-1	3	2			2	2	2			2	3	2	2	2	2					
CO-2	3	2			2	2	2			2	3	2	2	2	2					
CO-3	3	2			2	2	2			2	3	2	2	2	2					
CO-4	3	2			2	2	2			2	3	2	2	2	2					
CO-5	3	2			2	2	2			2	3	2	2	2	2					
CO-6	3	1									3	1			2					
CO-7	3	2			2	2	2			2	3	2	2	2	2					
CO-8	3				2	3	2				3	2			2					
CO-9	3	2									3	1			2					
CO-10	3	2									3	1			3					
Wgt Avg	3	1.9			2	2.1	2			2	3	1.7	2	2	2.1					

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान पद्धति, विश्लेषण पद्धति, प्रत्यक्ष कार्य पद्धति, अध्ययन यात्रा पद्धति।

इकाई	**पाठ्यविषय**	**तासिकाएँ**
इकाई – I	भारतीय काव्यशास्त्र का विकासक्रम। रस सिद्धांत : रस का स्वरूप, रस के अंग, रस निष्पति के सिद्धांत (भट्टलोल्लट, शंकुक, भट्टनायक, अभिनव गुप्त) साधारणीकरण की आवधारणा। सह्रदय की अवधारणा।	15 तासिकाएँ
इकाई – II	अलंकार सिद्धांत : परिभाषा, स्वरूप, अलंकार के भेद। काव्य में अलंकार का महत्व। वक्रोक्ति सिद्धांत : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद। ध्वनि सिद्धांत : ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धांत के प्रमुख भेद, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद।	15 तासिकाएँ
इकाई – III	टी. एस. इलियट : निर्वेयक्तिकता का सिद्धांत परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, वस्तुनिष्ठ समीकरण।	15 तासिकाएँ
इकाई – IV	आई. ए. रिचडर्स : मूल्य सिद्धांत, संप्रेषण सिद्धांत, काव्य भाषा सिद्धांत, व्यावहारिक आलोचना।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन 100 अंक

आंतरिक मूल्यांकन : 50 अंक (लघुत्तरी परीक्षा 20 अंक, शोध परियोजना- 20 अंक, मौखिक प्रस्तुति/क्षेत्र भेट (अध्ययन यात्रा) /साक्षात्कार- 10 अंक)

सत्रांत परीक्षा : 50 अंक

सत्रांत परीक्षा के प्रश्नपत्र का स्वरूप -

प्रश्न 1. इकाई-1 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 2. इकाई-2 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 3. इकाई-3 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 4. इकाई-4 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 5. इकाई-1,2,3,4 पर टिप्पणीयाँ। (चार में से दो) (हर इकाई पर एक-एक टिप्पणी) (10 अंक)

संदर्भ ग्रंथ :

1. भारतीय साहित्यशास्त्र – आ. बलदेव उपाध्याय।
2. काव्यशास्त्र की भूमिका – डॉ. नगेंद्र ।
3. काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र।
4. साहित्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांत – डॉ. राममूर्ती त्रिपाठी।
5. पाश्चात्य साहित्य चिंतन – निर्मला जैन, कुसुम बांठिया।
6. संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र – गोपीचंद नारंग।
7. आस्तित्ववाद और मानववाद – ज्यां पॉल सार्त्र।
8. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन – डॉ. बच्चन सिंह।
9. विश्व साहित्य – सं. डॉ. नगेंद्र।
10. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – देवेंद्रनाथ शर्मा।

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष / द्वितीय अयन

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट
HIN-556-MJ	भारतीय लोक साहित्य	4

लक्ष्य (Aim) :

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को समझने के लिए लोकसाहित्य का अध्ययन-अनुशीलन की आवश्यकता है। लोकसाहित्य के अध्ययन से भारत के विभिन्न प्रदेशों के लोक जीवन तथा लोकादर्शों का परिचय सबको एक-दूसरे के निकट लाएगा। भारत में प्रत्येक स्थान की अपनी भाषा व संस्कृति है। इस कारण उसमें मान्यताएं, अंधविश्वास, लोकरूढियां, लोक-कथाएं, लोकसंगीत व लोकनाट्य की अलग-अलग शैलियां दिखाई देती हैं। लोकसाहित्य लोक जीवन की अभिव्यक्ति, उसकी आशाओं तथा आकांक्षाओं का प्रेरक और संरक्षक है। जनसाधारण के मनोभावों एवं विचारों को समझने के लिए लोकसाहित्य को अपनाना तथा उसका अध्ययन नितांत आवश्यक है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

छात्र भारतीय लोक साहित्य की अवधारण एवं महत्त्व समझेंगे।

लोक साहित्य और लिखित साहित्य का अंतर समझ सकेंगे।

लोक साहित्य की व्यापकता और उपयोगिता को समझेंगे।

लोक साहित्य के विभिन्न प्रकारों से परिचित होंगे।

लोक साहित्य के विश्लेषण की क्षमता विकसित होगी।

लोक साहित्य की आधारभूमि का परिचय प्राप्त करेंगे।

लोक साहित्य की प्रकृति और महत्व समझेंगे।

लोक भाषा और लोक संस्कृति का अध्ययन करेंगे।

लोक साहित्य में निहित जीवन मूल्यों से परिचित होंगे।

लोक साहित्य का संकलन तथा प्रचार-प्रसार करेंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Critical Thinking	Moral & Ethical Values	Communication Skills	Life-long Learning	Evaluating Skills	Analytical Reasoning	Research-related skills	Professional Skills	Self Directed Learning	Domen Knowledge	Critical Thinking	Life Skills	Application of Knowledge	Synthesis of Knowledge	Research Aptitude	Employment Skills	Digital Literacy	Recreational Skills	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5	PSO-6	PSO-7	PSO-8	PSO-9	PSO-10
CO-1	3						2				3									
CO-2	3						2				3				2					
CO-3	3										3				2					
CO-4	3	1	2			2	2				3	1			3					
CO-5	3	2	2			2	2				3	2			2	2				2
CO-6	3	2	2			2	2				3	2			2	2				2
CO-7	3					2	2				3	2			2	2				2
CO-8	3	2	2			2	2				3	2			2	2				2
CO-9	3	2	2			2	2				3	2			2	2				2
CO-10	3	2	2			2	2				3	2			2	2			2	
Wgt Avg	3	2.2	2			2	2				3	1.8			2	2			2	2

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान पद्धति, विश्लेषण पद्धति, प्रत्यक्ष कार्यपद्धति, अध्ययन यात्रा पद्धति।

इकाई	**पाठ्यविषय**	**तासिकाएँ**
इकाई – I	लोकसाहित्य की परिभाषा, स्वरूप एवं विशेषताएँ, लोक संस्कृति और साहित्य, भारत में लोकसाहित्य के अध्ययन का इतिहास।	15 तासिकाएँ
इकाई – II	लोक-साहित्य संकलन : उद्देश्य, संकलन की पद्धतियाँ, संकलन कर्ता की समस्याएँ तथा समाधान।	15 तासिकाएँ
इकाई – III	लोक-गीत : संस्कार, व्रत, श्रम, ऋतु, जाति। लोकनाट्य : रामलीला, रासलीला, कीर्तनिया, स्वांग, यक्षगान, भवाई, जत्रा। महाराष्ट्र का लोकनाट्य : तमाशा, गोंधळ, लावणी, पोतराज, सुंबरन, वासुदेव, भारुड, ललित, दशावतार, पोवाडा, किर्तन।	15 तासिकाएँ
इकाई – IV	लोक-कथा : व्रत कथा, परी कथा, नाग कथा, बोध कथा, कथानक रूढियाँ। लोक संगीत : लोकवाद्य तथा विशिष्ट लोक धुनें। लोकभाषा : लोक सुभाषित, मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन 100 अंक

आंतरिक मूल्यांकन : 50 अंक (लघुत्तरी परीक्षा 20 अंक, शोध परियोजना- 20 अंक, मौखिक प्रस्तुति/क्षेत्र भेट (अध्ययन यात्रा) /साक्षात्कार- 10 अंक)

सत्रांत परीक्षा : 50 अंक

सत्रांत परीक्षा के प्रश्नपत्र का स्वरूप -

प्रश्न 1. इकाई-1 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 2. इकाई-2 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 3. इकाई-3 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 4. इकाई-4 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 5. इकाई-1,2,3,4 पर टिप्पणीयाँ। (चार में से दो) (हर इकाई पर एक-एक टिप्पणी) (10 अंक)

संदर्भ ग्रंथ :

1. भारतीय लोकसाहित्य – डॉ. श्याम परमार
2. लोकसाहित्य की भूमिका – डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
3. लोकसाहित्य की भूमिका – पं. रामनरेश त्रिपाठी
4. महाराष्ट्र की हिंदी लोककला – कृ. ग. दिवाकर
5. लोकसाहित्य और लोकसंस्कृति – दिनेश्वर प्रसाद
6. पारंपरिक भारतीय रंगमंच – कपिला वात्स्यायन, अनु. बरीउज्जया
7. लोकसाहित्य विज्ञान – डॉ. सत्येंद्र
8. लोकसाहित्य एवं लोक संस्कृति : परंपरा की प्रासंगिकता एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य – सं. वीरेंद्रसिंह यादव

□ □ □

एम प्रथम वर्ष / द्वितीय अयन. ए. हिंदी

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट
HIN-557-MJ	संवाद कौशल (प्रायोगिक)	4P

लक्ष्य (Aim) :

1. प्रभावशाली मौखिक संवाद कर सकेंगे।
2. कार्यक्रमों का सफल सूत्रसंचालन कर सकेंगे।
3. विभिन्न विषयों पर भाषण देने में सक्षम होंगे।
4. समूह चर्चा एवं साक्षात्कार में भाग ले सकेंगे।
5. मंच पर आत्मविश्वासपूर्वक प्रस्तुति दे सकेंगे।

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

1. विद्यार्थियों में प्रभावी संवाद क्षमता का विकास करना।
2. मंच संचालन (सूत्रसंचालन) की कला सिखाना।
3. भाषण कला एवं व्यक्तित्व विकास को प्रोत्साहित करना।
4. औपचारिक एवं अनौपचारिक संप्रेषण कौशल विकसित करना।
5. नेतृत्व, आत्मविश्वास एवं प्रस्तुतीकरण कौशल बढ़ाना।

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

प्रत्यक्ष कार्यपद्धति, अध्ययन यात्रा पद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – I	संवाद कौशल 1. मौखिक एवं अमौखिक संप्रेषण 2. शुद्ध उच्चारण एवं भाषा प्रयोग 3. व्यक्तित्वानुकूल संवाद शैली 4. औपचारिक एवं अनौपचारिक वार्तालाप 5. समूह चर्चा (Group Discussion)	15 तासिकाएँ
इकाई – II	सूत्रसंचालन कौशल 1. कार्यक्रम संचालन का परिचय 2. स्वागत, अतिथि परिचय एवं आभार प्रदर्शन 3. कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करना 4. मंच संचालन की भाषा एवं शैली 5. सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रम संचालन अभ्यास	15 तासिकाएँ

इकाई – III	भाषण कला 1. भाषण की तैयारी एवं संरचना 2. प्रेरणादायी, सामाजिक, शैक्षणिक विषयों पर भाषण 3. समयबद्ध भाषण अभ्यास 4. स्वर, लय, विराम एवं अभिव्यक्ति 5. तात्कालिक भाषण (Extempore)	15 तासिकाएँ
इकाई – IV	1. किसी कार्यक्रम का सूत्रसंचालन प्रस्तुतीकरण 2. भाषण प्रतियोगिता में सहभागिता 3. समूह चर्चा रिपोर्ट 4. व्यक्तिगत संवाद कौशल प्रस्तुति 5. मौखिक Seminar Presentation	15 तासिकाएँ

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष / द्वितीय अयन

अ. क्र.	Major Mandatory	क्रेडिट
HIN-558-MJ	हिंदी आलोचना	2 T

लक्ष्य (Aim) :

किसी वस्तु या कृति की चमक, व्याख्या अथवा उसका मूल्यांकन आदि करना आलोचना है। व्यवहारिक जीवन में किसी न किसी व्यक्ति वस्तु अथवा कार्यकलाप की आलोचना में हमारी सहज प्रवृत्ति होती है किंतु संस्कारों, चिंतन क्षमता एवं सामाजिक अवधारणा आदि अन्य व्यक्तिगत विशेषताओं के परिणाम स्वरूप हमारी प्रतिक्रियाओं में अंतर रहता है। इसी प्रकार साहित्य की आलोचना प्रतिक्रियाओं की देन होती है किंतु यह प्रतिक्रियाएं वैज्ञानिक संयम से अनुशासित रहती हैं। आलोचना के लिए समीक्षा शब्द भी प्रयुक्त होता रहा है। समीक्षा का उत्पत्ति परक अर्थ है, चमक, निरीक्षण। आलोचना मानव की सहज प्रवृत्ति है। यही कारण है कि उसका अस्तित्व अन्य माननीय प्रवृत्तियों अथवा संवेदना ओं की भांति चिरकाल से ही स्वीकार किया जाता है। आलोचना को साहित्य के संदर्भ में देखने पर साहित्य रचना के बाद उसका निर्माण सिद्ध हो जाता है। पहले रचनात्मक साहित्य प्रकाश में आता है और उसकी आलोचना की आवश्यकता बाद में अनुभव की जाती है। हिंदी आलोचना के आरंभिक युग में सामान्यतः यह धारणा प्रचलित थी कि आलोचना का अर्थ कृति विशेष का गुण-दोष विवेचन मात्र है। उत्पत्ति पर अर्थ लेने पर भी तात्पर्य में कोई बाधा नहीं पड़ती। इसलिए प्राचीन काल से ही आलोचक कृति विशेष का गुण दोष निर्णय मात्र अपना धर्म समझते रहे हैं किंतु वर्तमान हिंदी आलोचना का क्षेत्र विस्तृत हो गया है। परिणाम स्वरूप समीक्षा, आलोचना,समालोचना आदि शब्दों का अर्थ विस्तार हो गया है। वर्तमान आलोचना के अंतर्गत किसी कृति की विशेषताओं पर विचार करना,उसकी उपलब्धियों एवं अभावों का मूल्यांकन करना, रिश्ता एवं अभावों के विषयों में निर्णय देना, उसे श्रेणी बंद करना आदि अनेक अर्थ आते हैं ।रचना को समझने में पाठक की मदद करना भी आलोचक का दायित्व है। साहित्य आलोचना की दृष्टि एवं अनुसंधानात्मक दृष्टि विकास के लिए एम. ए. के पाठ्यक्रम में हिंदी आलोचना की आवश्यकता है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

छात्र हिंदी आलोचना विधा का परिचय प्राप्त करेंगे।

आलोचना के सामाजिक सरोकारों से अवगत होंगे।

साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्यन की आवश्यकता समझेंगे।

साहित्य और आलोचना का महत्व समझेंगे।

हिंदी के प्रमुख आलोचकों की जानकारी प्राप्त करेंगे।

विभिन्न आलोचना पद्धतियों से अवगत होंगे।

विभिन्न आलोचना पद्धतियों का संश्लेषण कर सकेंगे।

आलोचना पद्धतियों के आधार पर कृतियों का विश्लेषण कर सकेंगे।

आलोचना कौशल अर्जित करेंगे।

साहित्य कृतियों की आलोचना कर सकेंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Critical Thinking	Moral & Ethical Values	Communication Skills	Life-long Learning	Evaluating Skills	Analytical Reasoning	Research-related skills	Professional Skills	Self Directed Learning	Domen Knowledge	Critical Thinking	Life Skills	Application of Knowledge	Synthesis of Knowledge	Research Aptitude	Employment Skills	Digital Literacy	Recreational Skills	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5	PSO-6	PSO-7	PSO-8	PSO-9	PSO-10
CO-1	3	2					2	2			3	2		2	3	2				
CO-2	3	2					2	2			3	2		2	3	2				
CO-3	3	2					2	2			3	2		2	3	2				
CO-4	3	2					2	2			3	2		2	3	2				
CO-5	3	2					2	2			3	2		2	3	2				
CO-6	3	2					2	2			3	2		2	3	2				
CO-7	3	2			2	3	2	2			3	2	2	2	3	2				
CO-8	3	2			2	3	2	2			3	2	2	2	3	2				
CO-9	3	2			2	3	2	2			3	2	2	2	3	2			2	
CO-10	3	2			2	3	2	2			3	2	2	2	3	2			2	
Wgt Avg	3	2			2	3	2	2			3	2	2	2	3	2			2	

शिक्षा विधि (Pedagogy):

व्याख्यान पद्धति, विश्लेषण पद्धति, प्रत्यक्ष कार्यपद्धति, अध्ययन यात्रा पद्धति।

इकाई	**पाठ्यविषय**	**तासिकाएँ**
इकाई – I	आलोचना: स्वरूप एवं उद्देश्य। हिंदी आलोचना का संक्षिप्त इतिहास। आलोचना के सामाजिक सरोकार। आलोचना सार्थक और निरर्थक। कलावाद का खंडन और लोकमंगल की स्थापना। साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन की आवश्यकता।	15 तासिकाएँ
इकाई – II	आलोचना दृष्टि एवं पद्धतियां। मनोवैज्ञानिक आलोचना, शैलीवैज्ञानिक आलोचना सौंदर्य शास्त्रीय आलोचना, स्वच्छंदतावादी आलोचना, पारिस्थितिकी आलोचना। हिंदी के प्रमुख आलोचक: आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य नंददुलारे वाजपेई, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य नामवरसिंह, आचार्य रमेश कुंतल मेघ।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन 50 अंक

आंतरिक मूल्यांकन : 25 अंक (लघुत्तरी परीक्षा 10 अंक, शोध परियोजना- 10 अंक, मौखिक प्रस्तुति/क्षेत्र भेट (अध्ययन यात्रा) /साक्षात्कार- 05 अंक)

सत्रांत परीक्षा : 25 अंक

सत्रांत परीक्षा के प्रश्नपत्र का स्वरूप -

प्रश्न 1. इकाई-1 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 2. इकाई-2 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 3.इकाई-1,2 पर टिप्पणीयाँ। (दो में से एक) (हर इकाई पर एक-एक टिप्पणी) (05 अंक)

संदर्भ ग्रंथ :

1. आलोचना की सामाजिकता-मैनेजर पांडेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2008।

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष / द्वितीय अयन

अ. क्र.	Major Elective Mandatory (one)	क्रेडिट
HIN-562-MJ	अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार Theory	2T

लक्ष्य (Aim) :

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान पद्धति, विश्लेषण पद्धति, प्रत्यक्ष कार्यपद्धति, अध्ययन यात्रा पद्धति।

इकाई	**पाठ्यविषय**	**तासिकाएँ**
इकाई – I	अनुवाद – अर्थ, परिभाषा एवं स्वरुप अनुवादक के गुण, अनुवाद के उद्देश्य अनुवाद का महत्व एवं उपयोगिता अनुवाद के प्रकार अनुवाद के क्षेत्र	15 तासिकाएँ
इकाई – II	अनुवाद प्रक्रिया स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा समतुल्यता की संकल्पना अनुवाद की समस्याएँ	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन 50 अंक

आंतरिक मूल्यांकन : 25 अंक (लघुत्तरी परीक्षा 10 अंक, शोध परियोजना- 10 अंक, मौखिक प्रस्तुति/क्षेत्र भेट (अध्ययन यात्रा) /साक्षात्कार- 05 अंक)

सत्रांत परीक्षा : 25 अंक

सत्रांत परीक्षा के प्रश्नपत्र का स्वरूप -

प्रश्न 1. इकाई-1 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 2. इकाई-2 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 5. इकाई-1,2,पर टिप्पणीयाँ। (दो में से एक) (हर इकाई पर एक-एक टिप्पणी) (05अंक)

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष / द्वितीय अयन

अ. क्र.	Major Elective Mandatory (one)	क्रेडिट
HIN-563-MJ	अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार Practical	2P

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

प्रत्यक्ष कार्यपद्धति, अध्ययन यात्रा पद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – III	सामान्य अनुवाद हिंदी से मराठी मराठी से हिंदी हिंदी से अंग्रेजी समाचार एवं लेख का अनुवाद कहानी, उपन्यास, निबंध, कविता के अंश का अनुवाद	15 तासिकाएँ
इकाई – IV	साहित्यिक कृति का अनुवाद साहित्येतर कृति का अनुवाद	15 तासिकाएँ

अ. क्र.	Major Elective Mandatory (one)	क्रेडिट
HIN-564-MJ	आधुनिक हिंदी कविता	2T

लक्ष्य (Aim) :

मानव सभ्यता के सर्वांगीण विकास में साहित्य का अतुलनीय योगदान रहा है। आधुनिक काल के हिंदी कवियों ने इस दृष्टि से कविता साहित्य में कई प्रयोग किए हैं। हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल हिंदी भाषा और साहित्य के विकास की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय काल है। आधुनिक काल में खड़ी बोली के माध्यम से गद्य और पद्य दोनों का समान विकास हुआ है। आधुनिक काल का कविता साहित्य नवीनता का भाग बनकर जनसाधारण में नवोन्मेष भरता दिखाई देता है। इस काल का साहित्य सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों में जन आकांक्षाओं के अनुरूप जन आंदोलन को प्रेरित करता है, अतः इसे पुनर्जागरण काल के रूप में भी जाना जाता है। आधुनिक काल का कविता साहित्य बदलते हुए परिवेश में विभिन्न परिस्थितियों पर प्रकाश डालता है। इस दृष्टि से आधुनिक काल में हिंदी कविता का जो उन्नत स्वरूप दिखाई देता है वह विशिष्ट एवं उल्लेखनीय है।

आधुनिक हिंदी काव्य का आरंभ 19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुआ था। यह वह समय था जब हम अंग्रेजी सत्ता के गुलाम थे। अंग्रेजों के शासनकाल में बंगाल, महाराष्ट्र और पंजाब में सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार आन्दोलन की गूंज चारों दिशाओं में फैल रही थी। उस समय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जैसे सक्रिय साहित्यकारों ने सामाजिक जन जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तत्कालीन धर्म-समाज सुधारक आन्दोलन की गतिविधियों से हिंदी साहित्य काफ़ी हद तक प्रभावित हुआ है। परिणाम स्वरूप आधुनिक हिंदी कविताओं में राष्ट्रीयता, समाज सुधार, देशप्रेम, जनजागरण, विदेशी शक्तियों के प्रति तीव्र आक्रोश, शोषण तथा अत्याचार के विरुद्ध जन आंदोलन आदि भावों की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता साहित्य में मानव जीवन का अधिकाधिक यथार्थ और सूक्ष्म अंकन हुआ है। जिससे समाज मन में आम आदमी के प्रति काफी हद तक सहानुभूति निर्माण होने में सहायता हुई है। आधुनिक कविता साहित्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ हरिवंशराय बच्चन, केदारनाथ सिंह, कैलास वाजपेयी, शैल चतुर्वेदी, ज्ञानेंद्रपती, निर्मला पुतुल, वंदना टेटे आदि कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनका कविता साहित्य समाज को नई दृष्टि प्रदान करता है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

छात्र आधुनिक हिंदी कविता का स्वरूप और संरचना का परिचय प्राप्त करेंगे।

आधुनिक हिंदी हिंदी कविता के विकास क्रम का परिचय प्राप्त करेंगे।

आधुनिक हिंदी कविता में अभिव्यक्त संवेदना और शिल्प का अध्ययन करेंगे।

आधुनिक हिंदी कविताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

आधुनिक हिंदी कविता के प्रतिनिधि कवियों के काव्य का अध्ययन करेंगे।

आधुनिक हिंदी कविता के प्रतिनिधि कवियों की काव्य भाषा का अध्ययन करेंगे।

आधुनिक हिंदी कविता के प्रतिनिधि कवियों की शैलियों से अवगत होंगे।

आधुनिक हिंदी काव्य प्रवृत्तियों का अध्ययन करेंगे।

आधुनिक हिंदी कवियों का प्रदेय अंकित करेंगे।

आधुनिक हिंदी के प्रति रुचि उत्पन्न होगी।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Critical Thinking	Moral & Ethical Values	Communication Skills	Life-long Learning	Evaluating Skills	Analytical Reasoning	Research-related skills	Professional Skills	Self Directed Learning	Domen Knowledge	Critical Thinking	Life Skills	Application of Knowledge	Synthesis of Knowledge	Research Aptitude	Employment Skills	Digital Literacy	Recreational Skills	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5	PSO-6	PSO-7	PSO-8	PSO-9	PSO-10
CO-1	3	2					2				3	2				1				
CO-2	3	2	2				2				3	2				1				
CO-3	3	2	2				2				3	2				2				2
CO-4	3	2	2		2		2				3	2				2				2
CO-5	3		3				2				3	2				1				2
CO-6	3	1									3	1				2				2
CO-7	3	3					2				3	2			2	1				2
CO-8	3	2				3	2				3	2				1				2
CO-9	3	2				3	2				3	2				2				2
CO-10	3				3		2				3	2	3		2	3			3	
Wgt Avg	3	2	2.2		2.5	3	2				3	1.9	3		4	1.6			3	2

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान पद्धति, विश्लेषण पद्धति, प्रत्यक्ष कार्यपद्धति, अध्ययन यात्रा पद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – I	आधुनिक हिंदी कविता का विकासक्रम समकालीन कविता, नयी कविता, अकविता, जनवादी कविता सामान्य परिचय। हरिवंशराय बच्चन : जो बीत गई पुकार लो उक्त रचनाओं का संवेदना एवं शिल्पगत अध्ययन।	15 तासिकाएँ
इकाई – II	केदारनाथ सिंह : नदियाँ माँ, सुई और तागे के बीच में कैलास वाजपेयी : गैया कूड़ा उक्त रचनाओं का संवेदना एवं शिल्पगत अध्ययन।	15 तासिकाएँ

अंक विभाजन 50 अंक

आंतरिक मूल्यांकन : 25 अंक (लघुत्तरी परीक्षा 10 अंक, शोध परियोजना- 10 अंक, मौखिक प्रस्तुति/क्षेत्र भेट (अध्ययन यात्रा) /साक्षात्कार- 05 अंक)

सत्रांत परीक्षा : 25 अंक

सत्रांत परीक्षा के प्रश्नपत्र का स्वरूप -

प्रश्न 1. इकाई-1 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 2. इकाई-2 पर दो में से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न। (10 अंक)

प्रश्न 5. इकाई-1,2,पर टिप्पणीयाँ। (दोमें से एक) (हर इकाई पर एक-एक टिप्पणी) (05अंक)

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी कविता अभी, बिल्कुल अभी – नंदकिशोर नवल ।
2. हिंदी कविता आधुनिक आयाम – डॉ. रामदरश मिश्र।
3. अकविता और कला संदर्भ – डॉ. श्याम परमार।

4. हिंदी साहित्य का इतिहास – रामचंद्र शुक्ल।
5. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेंद्र।
6. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त

अ.क्र.	Major Elective Mandatory (one)	क्रेडिट
HIN-565-MJ	आधुनिक हिंदी कविता	2P

लक्ष्य (Aim) :

मानव सभ्यता के सर्वांगीण विकास में साहित्य का अतुलनीय योगदान रहा है। आधुनिक काल के हिंदी कवियों ने इस दृष्टि से कविता साहित्य में कई प्रयोग किए हैं। हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल हिंदी भाषा और साहित्य के विकास की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय काल है। आधुनिक काल में खड़ी बोली के माध्यम से गद्य और पद्य दोनों का समान विकास हुआ है। आधुनिक काल का कविता साहित्य नवीनता का भाग बनकर जनसाधारण में नवोन्मेष भरता दिखाई देता है। इस काल का साहित्य सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों में जन आकांक्षाओं के अनुरूप जन आंदोलन को प्रेरित करता है, अतः इसे पुनर्जागरण काल के रूप में भी जाना जाता है। आधुनिक काल का कविता साहित्य बदलते हुए परिवेश में विभिन्न परिस्थितियों पर प्रकाश डालता है। इस दृष्टि से आधुनिक काल में हिंदी कविता का जो उन्नत स्वरूप दिखाई देता है वह विशिष्ट एवं उल्लेखनीय है।

आधुनिक हिंदी काव्य का आरंभ 19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुआ था। यह वह समय था जब हम अंग्रेजी सत्ता के गुलाम थे। अंग्रेजों के शासनकाल में बंगाल, महाराष्ट्र और पंजाब में सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार आन्दोलन की गूंज चारों दिशाओं में फैल रही थी। उस समय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जैसे सक्रिय साहित्यकारों ने सामाजिक जन जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तत्कालीन धर्म-समाज सुधारक आन्दोलन की गतिविधियों से हिंदी साहित्य काफ़ी हद तक प्रभावित हुआ है। परिणाम स्वरूप आधुनिक हिंदी कविताओं में राष्ट्रीयता, समाज सुधार, देशप्रेम, जनजागरण, विदेशी शक्तियों के प्रति तीव्र आक्रोश, शोषण तथा अत्याचार के विरुद्ध जन आंदोलन आदि भावों की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता साहित्य में मानव जीवन का अधिकाधिक यथार्थ और सूक्ष्म अंकन हुआ है। जिससे समाज मन में आम आदमी के प्रति काफी हद तक सहानुभूति निर्माण होने में सहायता हुई है। आधुनिक कविता साहित्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ हरिवंशराय बच्चन, केदारनाथ सिंह, कैलास वाजपेयी, शैल चतुर्वेदी, ज्ञानेंद्रपती, निर्मला पुतुल, वंदना टेटे आदि कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनका कविता साहित्य समाज को नई दृष्टि प्रदान करता है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

छात्र आधुनिक हिंदी कविता का स्वरूप और संरचना का परिचय प्राप्त करेंगे।

आधुनिक हिंदी हिंदी कविता के विकास क्रम का परिचय प्राप्त करेंगे।

आधुनिक हिंदी कविता में अभिव्यक्त संवेदना और शिल्प का अध्ययन करेंगे।

आधुनिक हिंदी कविताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

आधुनिक हिंदी कविता के प्रतिनिधि कवियों के काव्य का अध्ययन करेंगे।

आधुनिक हिंदी कविता के प्रतिनिधि कवियों की काव्य भाषा का अध्ययन करेंगे।

आधुनिक हिंदी कविता के प्रतिनिधि कवियों की शैलियों से अवगत होंगे।

आधुनिक हिंदी काव्य प्रवृत्तियों का अध्ययन करेंगे।

आधुनिक हिंदी कवियों का प्रदेय अंकित करेंगे।

आधुनिक हिंदी के प्रति रुचि उत्पन्न होगी।

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

प्रत्यक्ष कार्यपद्धति, अध्ययन यात्रा पद्धति।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई – I	काव्य- पाठ एवं प्रस्तुतीकरण कवि मैथिलीशरण गुप्त ,रामधारी सिंह दिनकर निराला , हरिवंशराय बच्चन अनामिका	15 तासिकाएँ
इकाई – II	कविता का विवेचन विषय वस्तु भाव एवं विचार भाषा एवं शैली	15 तासिकाएँ

एम. ए. हिंदी प्रथम वर्ष / द्वितीय अयन

अ.क्र..	Internship	क्रेडिट
HIN-581-MJ	On Job Training [OJT / FP]	4

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

छात्र शिक्षा और रोजगार के बीच मध्यस्थ तालमेल बनाएँगे।

व्यवसायिक कौशलों का विकास होगा।

प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से रोजगार के लिए आवश्यक कौशल सीखेंगे।

ज्ञानार्जन के साथ अर्थार्जन की कला सीखेंगे।

स्वावलंबन की शिक्षा प्राप्त करेंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Critical Thinking	Moral & Ethical Values	Communication Skills	Life-long Learning	Evaluating Skills	Analytical Reasoning	Research-related skills	Professional Skills	Self Directed Learning	Domen Knowledge	Critical Thinking	Life Skills	Application of Knowledge	Synthesis of Knowledge	Research Aptitude	Employment Skills	Digital Literacy	Recreational Skills	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5	PSO-6	PSO-7	PSO-8	PSO-9	PSO-10
CO-1		3			3		3	2	2	3		3	2	3		2	2			
CO-2		3			3		3	2		3		3	2	3		2	2			2
CO-3		3			3		3	2		3		3	2	3		2				2
CO-4		3			3		3	2		3		3	3	3		2				2
CO-5		3			3		3	2		3		3	2	3		2				2

CO-6		3			3		3	2		3		3	2	3		2				2
CO-7		3			3		3	2		3		3	2	3		2				2
CO-8		3			3		3	2		3		3	2	3		2				2
CO-9		3			3		3	2		3		3	2	3		2				2
CO-10		3			3		3	3		3		3		3		3				2
Wgt Avg		3			3		3	2.1		3		3	2.1	3		2.1	2			2

अ.क्र.	**संस्थाएं / कार्यालय**	**प्रत्यक्ष प्रशिक्षण**
1	प्रशासनिक कार्यालय/ संस्थाएं	
2	बैंक सेवा कार्यालय	
3	बीमा कार्यालय	
4	डाकघर	
5	दूर संचार कार्यालय	
6	हिंदी प्रचार प्रसार संस्थाएं	
7	व्यायसायिक संस्थाएं	
8	व्यायसायिक रंगमंच	
9	रेल कार्यालय	
10	अनुवाद केंद्र	
11	नाट्य संस्थाएं	
12	व्यक्तित्व विकास केंद्र	
13	केंद्र सरकार के कार्यालय	
14	स्थानिक पत्र पत्रिकाओं के कार्यालय	
16	मीडिया के कार्यालय/आकाशवाणी / प्रिंट मीडिया	
17	मुद्रणालय	
18	पर्यटन विभाग	
19	शैक्षिक संस्थाएँ	

उपर्युक्त संस्थाओं के आलावा भी संबधित महाविद्यालय विषय से संबधित किसी अन्य संस्थान/कार्यालय के साथ संपर्क कर छात्रों को प्रशिक्षित कर सकता है। महाविद्यालय द्वारा संबंधित संस्थान के साथ समझौता ज्ञापन (MOU) करना आवश्यक है।

□ □ □